JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रकृतिवाद : विचार या सिद्धान्त

डा0 अज़रा बानो
एसोसिएट प्रोफसे र अर्थशास्त्र विभाग
नारी शिक्षा निकेतन पी0जी0 कॉलेज,
लखनऊ–226022
मो0 9415766472
ई–मले azrarafique7@gmail.com

सार

18वहं शताब्दी के प्रथम चरण के उपरान्त फ्रांस में कुछ ऐसे विचारक हुये जिन्होनं` कुछ ऐसे नियमो ˙ की प्रतिस्थाना की जो कि इस भौतिक जगत को नियंत्रित करते थे। अपने विचारो ˙ के प्रस्तुतिकरण मे ˙ वे ऐसे भी विचार प्रतिपादित कर गये हैं जो कि आधुनिक आर्थिक विज्ञान के आधार बन गय` हैं। इन विचारो ˙ को प्रकृतिवादी या निर्वाधवादी के नाम से तथा इनकी विचारधार को फीज़ियोक्रसी (Physiocaracy) के नाम से पुकारा गया है।

मुख्य शब्द प्रकृतिवाद, कृषि, प्राकृतिक संसाधन, व्यापार

According to Prof. H. Higgs – „Physiocrates have been the subject of so many and such divergent appreciation by historians, philosphers, economists & student of political science that hardly a single general proposition of importance has been advanced with regard them by one writer which has not been contradicted by another‟ इतिहासकारो, दार्शनिको, अर्थशास्त्रियो ˙ और राजनीति शास्त्र के विद्यार्थियो ˙ ने इनके विचारो ˙ की प्रशंसा विभिन्न प्रकार से की हैं और इनके

योगदान के विषय में लखे ाको ˙ में एक मत नहीं मिलता है। फिजियोक्रेटी (Physiocratie) एक फ्रॉसीसी भाषा का शब्द है, जिसका निर्माण ग्रीक भाषा के फिजियस + क्रेटस (Physicus+Crates) शब्दो ˙ के मेल द्वारा हुआ है। इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम एक फ्रॉसीसी लखे ाक (Dupont De Nemours) ने 1768 मे ˙ किया था। Physio का अर्थ प्रकृति और का Cracy अर्थ है शासन प्रणाली अर्थात् प्रकृति का शासन „Rule of Nature.‟ फ्रांस के विचारको ˙ ने ऐसे विचार प्रतिपादित किये जो कि आधुनिक आर्थिक विज्ञान के आधार बन गय` है। इन विचारको ˙ को प्रकृतिवादी Physiocrats के नाम से तथा इनकी विचार धारा को Physiocracy के नाम से पुकारा जाता है। इस व्यवस्था का प्रमुख आधार प्राकृतिक विधान है। इस विचार धारा के मूल संस्थापक

फ्रैको ˙ केने थे।

पकृतिवादी, वाणिज्यवादियो ं के विपरीत थे। इनका विश्वास था प्रकृति के नियमो ं पर चल कर मनुष्य अधिक से अधिक सुख एव ं समृद्धि प्राप्त कर सकता है। इन सभी विद्वानो ं को निम्नलिखित तीन नामो ं से पुकारा गया हैं:–

1– प्रकृतिवादी **(The Physiocrats)** इन विद्वानो ं के प्रायः सभी सिद्धान्त एव ं नियम प्रकृति पर आधारित थे। प्रकृति तत्व पर अधिक बल देने के कारण इन्हे ं प्रकृति वादी (Physiocrats) नाम से पुकारा गया है।

2– कृषि शाखा के विचारक – इन विद्वानो ं ने कृषि उद्योग के महत्व भी दृष्टि से प्रथम स्थान दिया है। इसी से Adam Smith के विचारक या कृषि वादी (Agriculturists) के नाम से पुकारा और उनके विचारो ं को कृषि शाखा (Agricultural School) नाम से पुकारा है। प्रकृतिवादी कृषि विकास को आर्थिक विकास का साधन मानते हैं। इस सन्दर्भ मे ंFranco Quesnay कैने का मत है कि प्रत्ये कवह बात जो कृषि के लिय` हानिकारिक है राष्ट्र तथा राज्य दोनो ं के ही विरूद्व है। इसके विपरीत प्रत्येक वह बात जो कृषि के लिय `हितकर है, राज्य और राष्ट्र दोनो ं ही के लिय` लाभपूर्ण होती है। „Every thing which is of disadvantage to agricultural prejudices the interest of the nation and of the state, and every thing which is favourable to agriculture is benefited to the state and the nation‟.

3– अर्थशास्त्रीं– ये सिद्धांत स्वयं अपने आप को अर्थशास्त्री कहलाना पसन्द करते थे। T. Shumpter के अनुसार ये फिजोक्रटे स या Economists ही थे, जिन्होनं` एक महान दरार फोड़ी जिसमं` होकर आगामी समस्त प्रगति सम्भव हुई है।

„It was however, the Plysiocrstys of Economists who made the great break through which by all further progress in the field of analysis, by discovery and intellectual formulation of the circular flow of economic life.‟ प्रमुख विचारकः–

1. **Framics Quesnay (1694-1774)**
2. **Duepont de Nemours (1793-1817)**
3. **Anne Robert Teurgot (1727-1781)**
4. **Mirabeau (1715-1789)**
5. **Le Trosne (1728-1780)**
6. **Abbe Baudean (1730-1792)**

प्रकृतिवाद को जन्म देने वाले कारणः– प्रकाशित तथ्यो ं के आधार पर यह कहा गया है कि प्रकृतिवादी विचार धारा 1756 से 1778 तथा लगभग 22 वर्षों तक प्रचलित रही। इस विचार धारा का प्रारम्भ फ्रांस मे ं हुआ था और वहॉ ं से सारे संसार मे ं फैल गया। वास्तव मं` प्रकृतिवाद, वाणिज्यवाद के वियद्ध एक प्रकार की क्रान्ति थी जो कि लागे ों की भुखमरी, यातनाओ ं और परीधीरता के प्रति उदार दृष्टिकोण बना कर विकसित हुई थी। प्रकृतिवाद से उदय के कारण इस प्रकार हैः–

1– फ्रांस की दशा– Louis लुई पंचदश (XV) और षोड्स (Louis XVI) के राज्य काल मे ं फ्रांस की दशा बहुत अधिक बिगड़ गई थी। फ्रांस की तात्कालिक दशा का चित्र Prof. Hanay ने खींचा है उनका कहना है कि उस समय के फ्रांस की दशा बड़` रेलवे या कारखाने की भॉति थी जो कि हृास एव ं क्षय के लिए कोई व्यवस्था नहीं रखता है। वास्तव मे ं उसकी उत्पादन शक्ति समाप्त हो चुकी थी। उन्हीं के शब्दो ं मे ं„In short, France was like a great railway of factory which has made no allowance for depreciation or depletion her productive power was impaired & her credit shaken.‟

2– वाणिज्यवादी नीति– फ्रांस में वाणिज्यवाद को 'कॉलबर्टवाद (colbertism) के नाम से पुकारा जाता था। वाणिज्यवादी आलोचको ं मे ंMelon, Fcnclon, Marshall, Vauban तथा Richard Carntillon आदि प्रमुख हैं। इन आलोचको ं की आलोचनाओ ं ने जहॉ ं वाणिज्यवाद को जर्जर बनाया हैं, वहीं दूसरी ओर प्रकृतिवाद को जीवन प्रदान करने मे ं पर्याप्त योग दिया है। निश्चय ही इन आलोचनाओ ं मे ं उस समय की उत्पन्न समस्याओ ं का उत्तम समाधान था जिसे व्यक्तियो ं ने सप्रेम अपनाया।

3– राज्य का अपव्यय:– 14वीं शताब्दी से लके र 16वीं शताब्दी तक फ्रांस मे ं लुई वंश का शासन अत्याचारो ं से भरा पड़ा था। राजा जनता का शाोषण कर के विलासता का जीवन व्यतीत कर रहा था। राजा कहता था ''मै ही हूॅ'' (I am the state) राज्य दरबारी अपनी स्वार्थों की पूर्ति के लिय` राजकोष से मनमाना धन खर्च करने लगे थे। राज्य पर ऋण भार दिन प्रतिदिन बढन` लगा था। ऐसे विषम परिस्थितियो ं ने नवीन विचारो ं के विकास के लिय` नया आधार प्रस्तुत कर दिया।

4– अनावश्यक करारोपण:– राजदरबारो ं ने भारी खर्चों की पूर्ति के लिय` देश के निर्धनो ं पर अत्याधिक करारोपण किया जाने लगा। करारोपण का पूरा भार किसानो ं पर ही था। दक्षिणी फ्रांस मे ंTaille नामक प्रत्यक्ष कर लगाया गया था। व्यापारियो ं और किसानो ं से उनकी आय का 50 प्रतिशत भाग करों के रूप मे ं वसलू कर लिया जाता था। Mr. Hicks ने लिखा है ''फ्रांस की क्रान्ति का प्रमुख कारण भी अन्यायपूर्ण कर प्रणाली ही था जिसमे निर्धन वर्ग की अपेक्षा धनिको ं पर कर का भार कम था।

5– इंग्लैण्ड की कृषि क्रान्ति का प्रभाव:– इंग्लैण्ड के निवासी कृषि की ओर ध्यान देते थे। वे अधिक से अधिक पूॅजी लगाकर नये कृषि साधनो ं को अपना कर दिन प्रतिदिन उन्नत कर रहे थे। जिसका प्रभाव फ्रांस पर भी पड़ा। Mr. Haney ने लिखा है „The work of Newton was popularized, the philosophy of Lockef became widely accepted and the thought of Hume worked as a subtle leaven. ''इंग्लैण्ड ने अपनी कृषि की उन्नति द्वारा फ्रांस आदि देशों को प्रभावित किया तथा उन्हे ं कृषि क्रम की आरे प्रवृत्त किया था।''

6– विज्ञान की नवीन खोजो ं का प्रभावः– लागे ों का बौद्धिक स्तर दिन प्रतिदिन ऊँचा उठ रहा था। विज्ञान की विभिन्न शाखाओ ं मे ं अनेक महत्वपूर्ण अनुसंधान हो रहे थे। Newton अपने विशेष सिद्धान्त भूमि का गुरूत्वाकर्षण नियम „Law of Gravitation" की खोज कर चुके थे और Dr. Queney ने अनके ो ं खेती सम्बन्धी नियमो ं की खोज कर ली थी। इन सभी नियमो ं ने प्रकृति के महत्त्व को सामने रखा जिसने प्रकृतिवाद के विकास मे ं सहयोग दिया।

प्रमुख प्रकृतिवादी विचार या सिद्धातं

1– प्राकृतिक व्यवस्था **(The Natural Order)** – प्रकृतिवादी इस व्यवस्था को ''प्राकृति व्यवस्था का विज्ञान „Science of the Natural Order" भी कहते थे। कुछ लागे ों के मतानुसार प्राकृतिक व्यवस्था का अभिप्राय उस पुरानी व्यवस्था से है जिसमं` मनुष्य, मनुष्य रूप मे ं न रह कर एक पशु के सदृश्य जीवन व्यतीत करता था। दूसरा मत है कि मनुष्य समाज पर भी प्राकृतिक नियम इस तरह लागू होते हैं जो जिस तरह भौतिक पदार्थों पर होते हैं। डॉ0 केने के अनुसार ''मनुष्य और पशु–पक्षी एक से प्राकृतिक नियमो ं से ही नियंत्रित होकर कार्य करते

हैं।'' „The natural order is merely the physical constitution which god himself has given the universe." इस विचार को रिवेरी ने इस प्रकार व्यक्त किया है‍ ''इसकी स्थापना मनुष्यो ं द्वारा न होकर ईश्वर के द्वारा होती है।'' „The social order is not the work of man, but is on the contrary, instituted by the auther of all nature himself, as all the other branches of the physical order." इसी मत का समर्थन Prof Haney द्वारा भी है ''प्राकृतिक व्यवस्था और कृत्रिम व्यवस्था मे ं पर्याप्त अन्तर है। कृत्रिम व्यवस्था अपूर्ण हैं क्योकि वह मानवीय होती है।'

„It stood opposed to the order positive whose laws are human & whose arrangements are the imperfect of existing governments in the resembling the distinction between made by Thomas Aqinas and ancient philosophers before him." प्राकृतिक व्यवस्था के दर्शन प्राप्त करने का मार्ग बताते हुये डॉ0 कैने का कथन है कि मनुष्य को उस शिक्षा तक संस्कृति को ग्रहण करना चाहिये जो ईश्वरीय ज्योति को पहचानने मे ं सहायक होती है। „The laws of Natural order do not in any restrain the liberty of mankind of the great advantage which they possess is that they make of greater liberty."

2– शुद्व उत्पत्ति **(Net Product)** शुद्व उपज वह मात्रा है जो कुल उत्पादन मे ं से लागत को घटाने के बाद प्राप्त होती है। अतिरेक ही असली आय हैं। दूपो ं के अनुसार ''मनुष्य जाति की समृद्धि अधिकतम शद्ध उपज पर आश्रित है।'' The prosperity of mankind is bound up with maximum net production" कृषि की श्रेष्ठता को स्वीकार करते हुये कैन` ने कहा था ''कृषि राज्य के समस्त धन तथा समस्त नागरिको ं के धन का स्रोत हैं। Agriculture is the source of all the wealth for the state & the wealth of all citizens. " प्राकृतिवादियो ं का विचार था कि कृषि ही एकमात्र ऐसी व्यवस्था है जो उत्पादन का प्रमुख स्रोत था तथा अतिरेक पैदा कर के जन–जीवन मे ं खुशहाली ला सकता है। कैन` का कहना है कि ''यह भौतिक सत्य है कि पृथ्वी ही सभी वस्तुओ ं के स्रोत है, यह इतना स्पष्ट है कि इसमे ं कोई सन्देह नहीं कर सकता

है।'' The physical truth that the earth is the sources of all commodities is so very certain that none of us can doubt it.

3– समाज मे ं धन का वितरणः– प्रकृतिवादियो ं ने सर्वप्रथम समाज मे ं विभिन्न वर्गो के बीच धन अथवा वस्तुओ ं के वितरण की विधि का विश्लेषण किया था। प्रकृति वादी यह जानने के लिये इच्छुक थे कि समाज मं ` धन किस प्रकार एक वर्ग से दूसरे वर्ग तक पहुॅचता है। मिराबो के शब्दो ं मे ं„The have been since the world began three great inventions- The third is the economic table‟ जब से संसार प्रारम्भ हुआ है तब से तीन महत्वपूर्ण अविष्कार ऐसे हुये है जिन्होनं` राजनीतिक समाज को स्थिरता प्रदान की है। इसमे ं से पहला अधिकार है लखे ान कला का, दूसरा अविष्कार है द्रव्य का और तीसरा अविष्कार है आर्थिक सारणी जो प्रथम दोनों अविष्कारो ं की पूर्ति करती है। यह हमारे युग का एक महान आविष्कार है जिसका सफल हमारी सन्ताने ं भोगेंगी। इसमे ं एक बड़ा सत्य छिपा है और इसी आर्थिक सारणी का निर्माण प्रकृति वादियो ं ने किया है। प्रो0 कैंने ने समाज को तीन वर्गों मे ं विभाजित किया हैः–

i) उत्पादक वर्गः– कृषक का स्थान प्रथम है। इसके साथ मछली पकड़ने वाले, खाने खोदन` वाल` लागे ा ं को भी रखा गया है।

ii) सम्पत्तिवान वर्गः– इसमे ं भू–स्वामियो ं के अतिरिक्त राजाओ ं उनके सलाहकार, पादरियो ं तथा सैनिको ं को रखा गया है।

iii) अनउत्पादक वर्गः– इस वर्ग के अन्तर्गत व्यापारी, उद्योगपति, शिल्पकार तथा अन्य साधारण पेशा करने वाल` लागे सम्मिलित किये गये थे।

4– मूल्य सम्बन्धी विचारः– यद्यपि प्रकृतिवादी कृषि पदार्थों को उचित मूल्य प्रदान किये जाने के भारी पक्ष मे ं थे किन्तु मूल्य निर्धारण मे ं न कोई विशेष रूचि नहीं रखते थे। उनके अनुसार मूल्य दो प्रकार के हो सकते है।

i) आधारभूत मूल्य **(Prix or Fundamental Price)** :– यह मूल्य लागत पर आधरित है। बाद मे ं इसे सामान्य मल्ू य कहा जाने लगा।

ii) प्रचलित मूल्य **(Current Price)** :– वह बाजार मूल्य जो दुर्बलता आरै प्रचुरता के कारण क्रेताओ ं और विक्रेताओ ं के मोल–भाव करने की क्षमता से निर्धारित होता है।

प्रकृतिवादी मूल्य निर्धारण के किसी सिंद्धान्त का प्रतिपादन नहीं कर सकते थे। यह कार्य कुछ समय पश्चात् एडम स्मिथ के कुशल हाथों द्वारा किया गया था

5– मजदूरी जनसंख्या तथा ब्याज सम्बन्धी विचारः– प्रकृतिवादियो ं का विचार था कि मजदूर अपनी आवश्यकतानुसार पर्याप्त मजदूरी प्राप्त कर लते ा है। तारगो के अनुसार ''मजदूरी की अधिकता के कारण मालिक कम से कम मजदूरी देगा, किन्तु फिर भी यह मजदूरी इतनी होगी कि जो मजदूर की जीविका थोड़ी विलासता और थोड़ी बचत के लिय` भी काफी होगी।''

जनसंख्या वृद्धि को प्रकृतिवादी बुरा नहीं मानते थे। जनसंख्या का बढन् ा फ्रांस मे ं उस समय प्रचलित विचारधारा के अनुसार प्राकृतिक विधान के अनुकलू था तथा अच्छा समझा जाता था।

ब्याज दर शुद्ध उपज और इसके मूल्य पर निर्भर करती है। प्रो0 कैने का कहना था कि खेती मे ं जहां पूजं ी के प्रयागे से शुद्ध उपज मे ं वृद्धि होती है, ब्याज देना ठीक है, लेकिन उद्योगो मे ं जहां सम्पत्ति की वृद्धि नहीं होती है, ब्याज देना उचित नहीं है।

6– विदेशी व्यापारः– प्रकृतिवादियो ं के मतानुसार विनियम से धन का उत्पादन नहीं होता है। क्योंकि विनियम दोनो ं पक्षो ं द्वारा होता है जो बराबर मूल्य की वस्तुओ ं का आदान–प्रदान करते है। ऐसी परिस्थिति मे ं जबकि सामान्य मूल्य वाली वस्तुओ ं का आदान–प्रदान करते है। ऐसी परिस्थिति में जबकि सामान्य वस्तुओ ं का आदान–प्रदान होता है, धन का उत्पादन नहीं होता।

यह बात Le Trosne being given exchange for equal value. Consequently it is not a means of increasing wealth, for one gives us mush as other receives, but it is a means of satisfying wants & of varying enjoyment" 'प्रकृतिवादियो ं के अनुसार विदेशी व्यापार अनुउत्पादक किया है तथा एक प्रकार से समय की बर्बादी है। Riviere रिवेरी के शब्दो ं में ''व्यापार से सम्पत्ति मे ं उसी प्रकार से वृद्धि होती है जिस प्रकार से एक निश्चित ढंग से रखे

हुए शीशों में सामने मिली वस्तु को रखने से उसके कई रूप दिखाई पड़ते है। „Like mirror, too the traders seen to multiply commodities but they only deceive the superficial".

7– कर प्रणालीः– देश की सम्पत्ति की सुरक्षा, शिक्षा, कृषि उत्पादन मे ं वृद्धि, सड़का नहरो ं आदि जन कल्याण के कार्यों को सम्पन्न करने मे ं लिय` धन की आवश्यकता है। प्रकृतिवादियो ं ने राज्य की आय का मुख्य स्रोत कर ही बताया है और उनका मत है कि प्रत्येक नागरिक को प्रसन्नता के साथ यह राज्य को दे देना चाहिए। कैन` के अनुसार "The Govt. ought to be less concerned with the task for saving than with the duty of spending upon those operations that are necessary for the prosperity of the socialism. This heavy expenditure will increase when the country has become wealth" प्रकृतिवादियो ं मे ं मन के अनुसार कर केवल भू–सम्पत्ति स्वामियो ं से ही वसूल किया जाना चाहिये। प्रकृतिवादी परोक्ष कर के पक्ष मे ं न होकर प्रत्यक्ष कर का ही सुझाव दिया है।

प्रकृतिवाद का महत्वपण्ू र्ा प्रभाव – इसके महत्व इस प्रकार है :–

1– एलेकजेण्डर ने लिखा है कि कैन` को आधुनिक अर्थ मे ं अर्थशास्त्र मे ं नींव डालने वाला कहलाने का अधिकार है। Quensay has substantial claims to be regarded as the real founder of the political economy in the modern sense.

2– ये प्रकृतिवादी ही थे जिन्होनं` सर्वप्रथम व्यक्तिगत स्वतंत्रता के विचारो ं का समर्थन किया।

3– प्रकृतिवादियो ं ने व्यापार की अपेक्षा कृषि को अधिक महत्व दिया।

4– प्रकृतिवादी व्यक्तिगत सम्पत्ति के समर्थक थे।

5– प्रकृतिवादी ही प्रथम विचारक थे जिन्होनं` सुख–शान्ति के लिय` प्राकृतिक नियमो ं को मान्यता दी थी।

6– शुम्पीटर का कहना है कि कैने ने ही सर्वप्रथम सामान्य साम्य (General Equilibrium) की धारणा का प्रतिपादन किया था।

7– प्रकृतिवादियो ने ही उत्पादन के साधनो में वर्गीकरण का मार्ग प्रशस्त किया।

प्रकृतिवाद की त्रुटियॉः–

1– मूल्य सिद्धान्त के सम्बन्ध मे प्रकृतिवादी पूर्णतया अनभिज्ञ थे।

2– प्रकृतिवादियो में विचारो में विरोधाभास की ध्वनि झलकती है।

3– प्रकृतिवादी कृषि को उत्पादक मानते थे।

4– प्रकृतिवादियो की सबसे बड़ी त्रुटि ये थी कि वे उद्योग तथा व्यापार को बांझ कहते थे। शुद्ध उपज का उत्पादन कृषि को ही मानते थे।

5– प्रकृतिवादी व्यक्ति की स्वतन्त्रता मे बहुत अधिक विश्वास करते थे जिनमें परिणामस्वरूप उन्होनें सामाजिक कर्तव्यो तक को भुला दिया।

6– प्रकृतिवादियो का प्राकृतिक नियमो पर अटूट विश्वास था। वे इन नियमो को मनमाने ढ़गं में लागू करना चाहते थे।

प्रकृतिवादियों के विचारो का महत्व स्वीकार करते हुए एडम स्मिथ ने कहा है कि 'यह प्रणाली त्रुटिपूर्ण होते हुए भी सत्य के सबसे निकट है, जो कि अभी राजनीतिक अर्थशास्त्र के विषय पर प्रकाशित होता है और इसी कारण यह उस व्यक्ति के लिये जो इस महत्वपूर्ण विज्ञान के सिद्धांतो का सावधानी से अध्ययन करना चाहता है, ध्यान देने योग्य है।

"The system, however with all the imperfections is perhaps the nearest approximation to the truth that has yet been published upon the subject of political economy and is upon that account, worth the consideration of any man who wishes to examine with attention the principles of that very important science."

Natural Philosophy:- Prof Gide & Rist के मतानुसार स्मिथ के प्रकृतिवाद और आशावाद नामक दो मौलिक विचार मिलते हैं। इन दोनो के ही अधिकतर उनमे सिद्धांत आधारित हैं। Wealth of Nations मे ये दोनों विचार कहीं एक साथ और कहीं बिखरे रूप में दिखाई पड़ते है। Gide & Rist के अनुसार ''आधुनिक आर्थिक जगत असंख्य व्यक्तियो की स्वैच्छिक क्रियाओ का फल है जिसमे उन्होनें दूसरो का ध्यान नहीं रखा बल्कि अपनी इच्छा के अनुसार ही कार्य किया है। यह आर्थिक जगत किसी एक संगठनकर्ता के दिमाग से उपज या किसी समाज की कार्यान्वित योजना का परिणाम नहीं, बल्कि असंख्य लागे ों की भीड़ के अनगिनत कार्यो मे कुल जोड़ का प्रतिफल है जिसमे प्रत्येक व्यक्ति ने स्वेच्छा से कार्य किया है और उसे करते समय वह उस कार्य के महत्व व प्रभाव से पूर्ण रूप से परिचित भी नहीं रहा है।''

एडम स्मिथ का कथन है कि''आर्थिक संस्थाओं का जन्म और विकास अपने स्वाभाविक अथवा प्राकृतिक रूप मे हुआ है, जिनके निर्माण के लिये किसी प्रकार की योजना, बाहरी सहायक बल प्रयोग एवं नियमो का आवश्यकता नहीं पड़ी है। प्रत्येक व्यक्ति का अपना स्वार्थ होता है, वह अपना भला चाहता है। इसमे किसी हस्तक्षेप या संगठन की आवश्यकता नहीं है, ''यह मनुष्य के स्वभाव मे पाई जाने वाली अदला–बदली की रूचि का आवश्यक परिणाम है।'' "The present aspect of economic would of millions of individual

each of when follows his own sweet will taking no need to others but men doubting the ultimate results." स्मिथ के अनुसार मानव व्यवहार स्वाभाविक रूप से 6 उद्‌दश्े यो ंसे प्रेरित था – आत्म–अनुराग, सहानुभूति, स्वतंत्र होने की इच्छा, औचित्य भाव, श्रम की आदत और लने –देन की प्रवृत्ति, अदल–बदल और विनिमय एक दूसर` के लिये है। इस मानव व्यवहार के स्रोतो ं के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति स्वाभाविक ही अपना भलाई का स्वयं सर्वश्रेष्ठ न्यायाधीश था। अतः उस` अपनी इच्छानुसार व्यवहारिक स्वतंत्रता होनी चाहिए। Human conduct according to smith, was naturaaly actuated by six motives: self love, sympatty, the desire to be free, a sense of proposity, a habit of labour and the propensity to truck, Barter & exchange are thing for another given these springs of conduct each man of was naturally the best judge of his ur interest and should therefore be left few to persue in his own way. आत्महित के उत्पादन मं` सब का हित निहित होता है। यह स्मिथ का मूल दर्शन है। इस बात को सिद्ध करने के लिय` उसने निम्नलिखित उदाहरण दिये हैं:–

1– श्रम विभाजनः– हित पूर्ति की भावना ने धीरे–धीरे श्रम विभाजन को जन्म दिया है। प्रत्येक यक्ति अन्य व्यक्तियो ं को अपनी उत्पादित वस्तु इसी आशा से देता है कि बदले मे ं उसको स्वयं उसी हित की वस्तु मिल जायेगी। दूसरे सभी आवश्यकता की वस्तुओ ं को व्यक्ति स्वयं निर्मित नहीं कर सकता है। अतः उस` आवश्यकता की पूर्ति के लिय` विनिमय का सहारा लेना पड़ता है। फिर बाजारो ं का विस्तार हुआ। श्रम विभाजन का उदय हुआ। – एडम स्मिथ ने

स्वयं लिखा है "Divsision of labour is not originally the effect of any human wisdom which forces and intends that general opulence to which it gives occasion. It is consequence of a certain propensity in human natre, the propenstives to truck, barter and exchange one thing for another".

2– पूॅजी :– स्मिथ के अनुसार पूंजी का जन्म भी स्वाभाविक रूप से हुआ। अपनी दशा सुधारने के लिय` व्यक्तियो ं ने संचय प्रारम्भ किया होगा। जिसमं` कि उनका व्यक्तिगत स्वार्थ निहित है। स्मिथ के अनुसार अपनी स्थिति को सुधारने की इच्छा हमे ं बचत करने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह इच्छा हमे ं जन्म से ही हमारे मन मे ं निहित होती है तथा मृत्यु तक हमारा पीछा नहीं छोडत़ ी है। "But the principle which promotes to save, is the desire of bettering our condition advise which though generally claim anddispassionate, comes with us form the womb and never leaves us till we go into grave."

3– मांग एवं पूर्ति :– **(Demand & Supply)** – स्मिथ के अनुसार मांग एवं पूर्ति का सिद्धांत आर्थिक संख्याओं के प्राकृतिक निकास का ही उदाहरण है। मांग एवं पूर्ति का सामन्जस्य स्वाहित की भावना से होता है। यदि कभी वस्तु पूर्ति की मांग से अधिक होती है तो उत्पादको ं को वस्तु की लागत भी नहीं मिल पाती। उत्पादक स्वहित से प्रेरित होकर वस्तु की पूर्ति को घटा देगं े। अन्त मे ं वस्तु की पूर्ति घटकर मांग के बराबर हो जायेगी। इसके विपरीत जब किसी वस्तुओ ं की मांग पूर्ति से अधिक होती है तो मूल्य बढऩ ा है और वस्तु की पूर्ति भी बढ़ जाती है। संक्षेप मे स्मिथ के अनुसार ''वस्तु की बाजार

में बढ़ाई गई मात्रा स्वाभाविक रूप से मांग के बराबर होती है। "The quantity of every commodity brought to the market naturally suits itself to the effected demand"

4– मुद्रा– जब मनुष्यो ं को अदला–बदला प्रणाली की कठिनाईयो ं का अनुभव होने लगा तब बुद्धिमान लोगों ने एक सर्वमान्यता के गुण पर द्रव्य का जन्म हुआ। इस प्रकार स्पष्ट है कि द्रव्य अनेक व्यक्तियों मे ं कार्यों का परिणाम है। इस क्षेत्र मे ं सरकार का हस्तक्षेप तो बहुत बाद मे ं हुआ है।

5– जनसंख्या – स्मिथ के अनुसार जनसंख्या भी स्वाभाविक रूप से प्राकृतिक साधनो ं की मात्रा के साथ संतुलित होती है। यदि जनसंख्या प्राकृतिक साधनो ं की मात्रा से अधिक है तो कुछ समय के बाद जनसंख्या घटने लगेगी। इसके विपरीत यदि जनसंख्या प्राकृतिक साधनो ं से कम है तो धीरे–धीरे जनसंख्या बढ़ने लगेगी। वृद्धि का यह क्रम तब तक चलता रहेगा जब तक जनसंख्या प्राकृतिक साधनो ं के लगभग बराबर नहीं हो जाती। इस प्रकार जनसंख्या सन्तुलन की अवस्था मे ं रहेगी। स्मिथ के अनुसार "It is only when wages are very low that poverty & misery cause the death of many of them but when wages are gairly high several of then manage to reach maturity."

1– आलोचको ं का कहना है कि व्यक्ति केवल स्वहित से प्रेरित होकर कार्य नहीं करता है बल्कि कार्य करते समय उस पर अनेक बातो ं का भी प्रभाव पड़ता है।

2– आर्थिक संस्थाओं का जन्म प्राकृतिक एव ं स्वाभाविक रूप से नही हुआ है।

3– स्मिथ ने प्राकृतिक और स्वाभाविक रूप से विकसित आर्थिक संस्थाओं को समाज के लिये हितकर माना है। आलोचको ं ने इसे गलत धारणा कहा है– Gide & Rist के अनुसार While the conception of the spoutaneity of economic institutions seems to be just & fruitful, the demonstration given of the beneficial character appears insufficient and doubfful. आर्थिक संस्थाओं के स्वाभाविक विकास की धारणा तो उचित मालूम होती है, लेकिन उनका यह लाभकारी होना पूर्णतः प्रभावित नहीं होता।

सन्दर्भ

- आर्थिक विचारो ं का इतिहास – रमेश चन्द्र शर्मा राजीव प्रकाशन, मेरठ प्रथम संस्करण 1966
- आर्थिक विचारो ं का इतिहास – ऐरिक रोल सेन्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद, प्रथम सस्ं करण 1965

- आर्थिक विचारो ं का इतिहास – सुरेश चन्द्र शर्मा गाये ल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, द्वितीय ससं ोधित संस्करण 1965

- आर्थिक विचारो ं का इतिहास – डा0 महेश चन्द्र चतुर्वेदी

  –डा0 मिथलेश चन्द्र चतुर्वेदी

  साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, आई0एस0बी0एन0–978–93–83866–90–8

  काडे – 275

  Revised Addition -2009